IJAER/January-February 2016/Volume -5/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

# सामाजिक परिवर्तन और वृद्धाश्रमों का बढ़ता चलन

**Dr.Prabha Gupta**

**Lecturer Sociology**

**Maharana Pratap PG College Chittorgarh.Rajasthan**

***सार***

*समय के साथ साथ मानव प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है। कहा जाता है परिवर्तन प्रकृति का नियम है. परन्तु मानव अपनी बौद्धिक क्षमता के सहारे से अनेक परिवर्तन करता आ रहा है। नित नयी सुविधाएँ जुटाना उसका लक्ष्य रहता है और उसकी यह लालसा उन्नति का कारण बनती है। आज मानव उन्नति के उस शिखर पर पहुँच चुका है, जहाँ से विकास की गति को पंख लग गए है। विकास की गति कहीं अधिक तीव्र हो गयी है, शिक्षा का प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है, शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के कारण मानव का रहन सहन, खान पान एवं सोच में बड़े बदलाव आ रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन जीना चाहता है, अधिक से अधिक सुविधाएँ जुटा लेने की होड़ में लग गया है, इसी प्रतिद्वान्विता ने उसके सुख, चौन, शांति को छीन लिया है वह तनावग्रस्त होता जा रहा है। उसकी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं । उसके कारण आज का युवा परंपरागत रूढियों दकियानूसी मान्यताओं को तोड़ डालना चाहता है. वह स्वच्छंद एवं स्वतन्त्र होकर जीना चाहता है. उसकी यही सोच बुजुगों को आहत करती है। आज के बुजुर्ग अचानक आये परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं । उसे अपने समय के जीवन मूल्य और आदर्श ही अच्छे लगते हैं । अतः वह इसके लिए नए जमाने और नयी पीढ़ी को दोषी मानता है । परन्तु नयी पीढ़ी उनकी सोच को उनके सिद्धांतों को नकार देती है और पुरानी पीढ़ी से दूरियां बनाने लगती है, परिवार में सामंजस्य का अभाव उत्पन्न होने लगता है, जो घर में विद्यमान बुजुर्गों के लिए दुखदायी होता है।*

***मुख्य शब्द:*** *वृद्धावस्था, सामाजिक समस्याएँ ,तनावग्रस्त एवं परिवर्तन*

## परिचय

इतिहास इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि प्राचीन काल में वृद्धों की स्थिति अत्यंत उन्नत एवं सम्मानीय रही हैं। उन्हें समाज एवं परिवार में अलग वर्चस्व था। परिवार की समस्त बागडोर उनके हाथों हुआ करती थी। परिवार को कोई फैसला उनकी सलाह व मसविरे के आधार पर होता था । उन्हीं की सत्ता एवं प्रभाव के कारण पहले संयुक्त परिवार हुआ करते थे, वे परिवार के सदस्यों को एक धागे में बांधे रखते थे, परंतु भौतिकवादी युग में वृद्धों की समस्याओं का बढ़ना एवं समाज में उनकी उपयोगिता कम और समस्याएं बढ़ती नजर आ रही है। बुढ़ापा जीवन का अंतिम पड़ाव है और इस पड़ाव में जीवन असक्त हो जा है। कार्य करने की क्षमता कमजोर हो जाती है। भरण-पोषण के लिए दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है। यही निर्भरता वृद्धों की समस्याओं की मूल हैं। शारीरिक एवं आर्थिक दृषिट से घुटन भरी जिन्दगी जीने को विवश हो जाती है। चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित क्यों न हो, इस अवस्था में उनकी गाड़ी चरमराने लगती है, वह युवा पीढ़ी से तालमेल नहीं बैठा पाते है, जिससे उनकी समस्याओं की वृद्धि हो जाती है। विश्व में समाज का बहुत

बड़ा हिस्सा ऐसा है कि जहां वृद्धावस्था में अब सामाजिक एवं आर्थिक असुरक्षा के कष्ट झेलते है। युवा वर्ग वृद्धों को कोई महत्व नहीं देते हैं।

समय के साथ साथ मानव प्रगति पथ पर बढ़ता जा रहा है। कहा जाता है परिवर्तन प्रकृति का नियम है.परन्तु मानव अपनी बौद्धिक क्षमता के सहारे से अनेक परिवर्तन करता आ रहा है। नित नयी सुविधाएँ जुटाना उसका लक्ष्य रहता है और उसकी यह लालसा उन्नति का कारण बनती है। आज मानव उन्नति के उस शिखर पर पहुँच चुका है, जहाँ से विकास की गति को पंख लग गए है। विकास की गति कहीं अधिक तीव्र हो गयी है, शिक्षा का प्रचार प्रसार तेजी से हो रहा है, शिक्षा से प्राप्त ज्ञान के कारण मानव का रहन सहन, खान पान एवं सोच में बड़े बदलाव आ रहे हैं । प्रत्येक व्यक्ति आधुनिक सुविधाओं से युक्त जीवन जीना चाहता है, अधिक से अधिक सुविधाएँ जुटा लेने की होड में लग गया है, इसी प्रतिद्वान्विता ने उसके सुख, चौन, शांति को छीन लिया है।

वह तनावग्रस्त होता जा रहा है। उसकी सोच में क्रांतिकारी परिवर्तन आये हैं । उसके कारण आज का युवा परंपरागत रूढियों दकियानूसी मान्यताओं को तोड़ डालना चाहता है. वह स्वच्छंद एवं स्वतन्त्र होकर जीना चाहता है. उसकी यही सोच बुजुर्गों को आहत करती है। आज के बुजुर्ग अचानक आये परिवर्तनों को स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं । उसे अपने समय के जीवन मूल्य और आदर्श ही अच्छे लगते हैं । अतः वह इसके लिए नए जमाने और नयी पीढ़ी को दोषी मानता है । परन्तु नयी पीढ़ी उनकी सोच को उनके सिद्धांतों को नकार देती है और पुरानी पीढ़ी से दूरियां बनाने लगती है, परिवार में सामंजस्य का अभाव उत्पन्न होने लगता है, जो घर में विद्यमान बुजुर्गों के लिए दुखदायी होता है।

यदि पुरानी पीढ़ी के व्यक्ति यह सोच लें की अब बच्चों का जमाना है. वे आधुनिक वातावरण में पैदा हुए हैं, अतः वे नए जमाने के अनुसार ही रहना पसंद करते हैं। दुनिया में परिवर्तन तो होने ही हैं, उन्हें कोई नहीं रोक सकता। जब इन बदलावों को रोक नहीं सकते तो समझदारी यही है की हम भी अपनी सोच में यथाशक्ति परिवर्तन लाने का प्रयास करें ताकि नयी पीढ़ी से सामंजस्य बना पाने में सुविधा हो, और परिवार में बुजुर्गों का सम्मान बना रहे । परिवार का माहौल खुशनुमा बना रहेगा, बुजुर्गो का शेष जीवन सहज रूप से व्यतीत हो सके।

गत एक शताब्दी में मानव समाज ने अप्रत्याशित उन्नति की है मात्र सौ वर्षों के अंतराल में इंसान ने रेडियो टीवी, कंप्यूटर वायुयान मोटरगाड़ी, बस. सी. डी. डी वी डी आदि अनेकों नयी नयी खोजें की हैं, जो आज हमारी आवश्यकताओं में शामिल हो चुके हैं । आज इनके बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव लगती है। इस उन्नति ने जहाँ मानव को अनेक सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं तो दूसरी तरफ उनको पा लेने की होड़ ने सामाजिक ताने बाने को तोड़ कर रख दिया है। परंपरागत खेती बाड़ी दुकानदारी कारखाने आदि सभी व्यवसायों के रूप बदल चुके है। अब अधिक परिश्रम के कार्य नयी तकनीक के कारण अप्रासंगिक हो चुके हैं । अब श्रमसाध्य कार्य मशीनों द्वारा किये जाने लगे हैं । नयी नयी सुविधाओं और साधनों को पाने की ललक आज के युवा को अपने परंपरागत कारोबार छोड़कर दूर दराज के क्षेत्रों में जा कर नौकरी या रोजगार के लिए प्रेरित कर रही है। यातायात के नवीनतम साधनों अर्थात वायुयान ट्रेन कार आदि की उपलब्धता ने युवा को कहीं भी जाकर रोजगार करना संभव बना दिया है। जिसने अंततः संयुक्त परिवार को एकल परिवार में परिवर्तित करने को मजबूर कर दिया है. युवा वर्ग के अपना गांव, शहर छोड़ कर दूर दराज के इलाकों में चले जाने के कारण घरों में वृद्ध अकेले रह गए हैं।

पुरानी पीढ़ी के लोग नए परिवर्तन को न तो समझ पा रहे हैं और न ही स्वीकार कर पा रहे हैं। कमाई के नए साधनों के अनुरूप अपने आपको ढाल पाने में भी अक्षम हैं । अतः उनके पुराने कारोबार सफेद हाथी साबित होने लगे हैं । बढते खर्चों के सामने वे अपनी कमाई को ऊँट के मुंह में जीरा की माफिक महसूस करते हैं । इतनी तीव्र गति से आया परिवर्तन उन्हें शारीरिक एवं मानसिक रूप से व्यथित करता है । आज के प्रतिस्पद्धा युग में प्रत्येक व्यक्ति को चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, चाहे वह शिक्षा क्षेत्र हो कार्यक्षेत्र हो अथवा जीवन स्तर ऊंचा उठाने की होड हो. प्रत्येक इंसान को अधिकतम भौतिक वस्तुओं को पा लेने के लिए दौड़ लगानी पड़ रही है । जिसके लिए उसे अपने जीवन का अधिक से अधिक समय व्यय करना पड़ता है उसके पास अपने लिए, अपनों के लिए समय नहीं बच पाता, या बहुत कम बचता है । उसका समयाभाव बुजुर्ग को अपने प्रति उपेक्षा का अहसास कराता है । शीघ्र धनाढ्य बनने की लालसा ने युवा को क्रोधी एवं बेरुखा कर दिया है. युवा पीढ़ी की कार्यशैली से घर का बुजुर्ग परेशान हो जाता है और वह अपनी संतान को संवेदनहीन, अहसान फरामोश मानता है । नयी कार्य शैली एवं जीवन शैली उन्हें रास नहीं आती. वे अपने कार्यकाल के समय को उचित ठहराते हैं ।

आज हमारे समाज में वृद्ध लोगों को दोयम दर्जे के व्यवहार का सामना करना पड़ रहा है। देश में तेजी से सामाजिक परिवर्तनों का दौर चालू है और इस कारण वृद्धों की समस्याएं विकराल रूप धारण कर रही हैं। इसका मुख्य कारण देश में उत्पादक एवं मृत्यु दर का घटना एवं राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जनसंख्या की गतिशीलता है। देश में जल्दी ही यह विषमता आने वाली है कि वृद्धजन, जो कि जनसंख्या का अनुत्पादक वर्ग है, वह शीघ्र ही उत्पादक वर्ग से बड़ा होने वाला है ।

21वीं सदी में वृद्धों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि होने की संभावना है। विकसित राष्ट्रों में स्वास्थ्य एवं समुचित चिकित्सीय सुविधा के चलते व्यक्ति अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं अतः वृद्धों की जनसंख्या विकासशील राष्ट्रों से ज्यादा विकसित राष्ट्रों में ज्यादा है । भारत एवं चीन, जो कि विश्व की जनसंख्या का अधिकांश हिस्सा रखते हैं, इनमें भी बेहतर स्वास्थ्य एवं चिकित्सा सुविधा के चलते वृद्धों की जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि हुई है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्धजनों की संख्या 10.38 करोड़ है । यद्यपि यह समस्या इतनी गंभीर नहीं है जितनी वृद्धों के समाज में समन्वय की समस्या है। वृद्धों के समाज में समन्वय न होने के 2 मुख्य कारण हैं- 1. उम्र बढ़ने से व्यक्तिगत परिवर्तन 2. वर्तमान औद्योगिक समाज का अपने वृद्धों से व्यवहार का तरीका । जैसे-जैसे व्यक्ति वृद्ध होता जाता है, समाज में उसका स्थान एवं रोल बदलने लगता है ।

भारतीय संस्कृति में वृद्धों को अत्यंत उच्च एवं आदर्श स्थान प्राप्त है। श्रवण कुमार ने अपने वृद्ध माता-पिता को कंधे पर बिठाकर संपूर्ण तीर्थयात्रा करवाई थीं। आज भी अधिकांश परिवारों में वृद्धों को ही परिवार का मुखिया माना जाता है । कितनी विडंबना है कि पूरे परिवार पर बरगद की तरह छांव फैलाने वाला व्यक्ति वृद्धावस्था में अकेला, असहाय एवं बहिष्कृत जीवन जीता है। जीवनभर अपने मन, कर्म व वचन से रक्षा करने वाला, पौधों से पेड़ बनाने वाला व्यक्ति घर में एक कोने में उपेक्षित पड़ा रहता है या अस्पताल या वृद्धाश्रम में अपनी मौत की प्रतीक्षा करता है। आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति एवं सामाजिक मूल्यों के क्षरण की यह परिणति है । आज के वैश्विक समाज में वृद्धों को अनुत्पादक, दूसरों पर आश्रित, सामाजिक स्वतंत्रता से दूर अपने परिवार एवं आश्रितों से उपेक्षित एवं युवा लोगों पर भार की दृष्टि से देखा जाता है। जब तक हम वृद्धजनों

की कीमत नहीं समझेंगे, उस उम्र की पीड़ा का अहसास नहीं करेंगे, तब तक हमारी सारी अच्छाइयां बनावटी होंगी ।

**वृद्धों के समस्या के कारण**

आज हमारे देश में समस्याओं को बढ़ने के अनेक कारण है जो समाज की देन है। लेकिन जैसे-जैसे पशिचमीकरण, नैतिकवाद का विकास हुआ वैसे-वैसे वृद्धों को उपेक्षा का शिकार होकर समस्याओं में घिर गये है। आज इन वृद्धों की समस्याओं के बहुत से कारण है, जो इस प्रकार है:-

**संयुक्त परिवार का विघटनः** संयुक्त परिवारों का अशांत व घुटन भरा माहौल और नगरों की ओर तेजी से प्रस्थान करती हुई युवा पीढ़ी को अपने बुजुगों के प्रति उदासीनता ने आज हमारे समाज में गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है। यह वही देश है कि जहां की संस्कृति में परिवार के बुजुर्गों को भगवान के समान माना जाता था । आज की नई युवा पीढ़ी न तो बड़ों के अनुशासन में रहना चाहती और न ही आदर सम्मान कारना चाहती है।

**भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धिः** भौतिक सुख सुविधाओं की वृद्धि होने के कारण औधोगीकरण व संस्कृतिकरण के फलस्वरूप आज की युवा पीढ़ी का रहन-सहन एवं जीवन शैली में बदलाव तेजी से देखा जा रहा है। इस युग में कोई भी व्यक्ति अपने कार्यों में इतना व्यस्त हो रहे है कि उन्हें अपने परिवार के सदस्यों के साथ बैठना अब आवश्यकता ही नही समझते है, जिसकी सबसे बड़ी पीड़ा बुजुर्गों को ही झेलनी पड़ती है। परिवार की अवधारणा केवल पति-पत्नी एवं बच्चों तक ही सीमित होने लगा है और ये वृद्ध समाज एवं परिवार के क्षेत्र या सीमा से बाहर होते जा रहे है। आज की युवा पीढ़ी अपनी भौतिक सुख-सुविधाओं को अधिक महत्व देते है और वृद्धों पर कम । व्यकित को अपने आराम की हर वस्तु खरीदने के लिए पर्याप्त पैसा होता है लेकिन वृद्धों के बीमारियों के लिए पैसे नहीं।

**उद्देश्य**

1. वृद्धों की समस्याओं का बढ़ना एवं समाज में उनकी उपयोगिता
2. वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्या से घिरी हुई अवस्था माना जाता है

**वृद्ध पुरूषों की समस्याएं**

वृद्धावस्था को जीवन का अंतिम पड़ाव एवं समस्या से घिरी हुई अवस्था माना जाता है क्योंकि इस अवस्था में वृद्धों को अनेक समस्याएं घेर लेती है, जिसके परिणामस्वरूप दूसरों के साथ संबंध स्थापित करने में असमर्थ रहते है। समय की रफ्तार के साथ-साथ समाज में नये नये परिवर्तन होने लगे हैं। नई पीढ़ी के लोग पुराने विचारों के लोगों को अपने जीवन में आने को उपयुक्त नही समझते है। इस कारण युवा पीढ़ी उनके अनुभवों एवं विचारों की उपेक्षा करते है। वद्धों की समस्याओं एवं उनकी उपयोगिता भी समाज में कम होती नजर आने लगी है, जो इस प्रकार है:-

**शारीरिक समस्याः** वृद्धावस्था उतरते या ढलते काल है। इस अवस्था में शरीर शिथिल होने लगते है। वृद्धावस्था में शरीर में बदलाव का परिणाम सामाजिक बदलाव पर होता है। इस अवस्था में अनेक समस्याएं निर्मित होती

है। कोई व्यकित 60 साल में भी जवान दिखाई देता है तो कोई 40 साल में ही वृद्ध दिखने लगता है। वृद्धावस्था में व्यक्ति के शरीर में झुर्रिया, चिड़चिड़ापन जैसे अनेक लक्षण दिखाई देने लगते है ।

**मानसिक समस्याः** शारीरिक बदलाव के अनुसार मानसिक परिवर्तन भी होता है। इस अवस्था के प्रवेश करते ही मानसिक तनाव की सिथति बनने लगती है तथा लोगों से संपर्क बनाना सहयोगी या मित्रों के निधन हो जाने से मानसिक तनाव एक महत्वपूर्ण कारण है। सर्व विदित है कि यदि पति या पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाने से हीन भावना की वृद्धि होती है तथा आत्मविश्वास का अभाव दिखने लगता है जिससे मानसिक विकृत, अकेलापन आदि जैसे दोष निर्माण होते है। अतः समाज को अपना कुछ भी उपयोग नहीं होने से निरूपयोगिता की भावना का जन्म होने लगता है।

स्वास्थ्य की समस्याः शारीरिक बदलाव के अनुसार मानसिक परिवर्तन भी होता है। इस अवस्था के प्रवेश करते ही स्वास्थ्य की समस्या बनने लगती है तथा लोगों से संपर्क बनाना सहयोगी या मित्रों के निधन हो जाने से स्वास्थ्य की समस्या एक महत्वपूर्ण कारण है।

**आर्थिक समस्याः** यह समस्या वृद्धों की महत्वपूर्ण समस्या है। वृद्धों को आर्थिक समस्या का अभाव ज्ञात होने लगता है। कार्य क्षमता की कमी होती है जिससे दूसरों पर निर्भरता बढ़ने लगती है और युवाओं द्वारा या परिवार के सदस्यों द्वारा उन्हें अकेला छोड़ दिया जाता हैं।

**पारिवारिक एवं सामाजिक समस्याः** सर्व विदित है कि इस अवस्था में शारीरिक एवं मानसिक रूप से कमजोर होने के कारण वे समूह एवं परिवार से अलग होने लगते है जिसके कारण सामाजिक व पारिवारिक संबंधों में बुरा असर होने लगता है।

जहां तक मैने देखा है कि परिवार में सदस्यों के साथ मतभेद निमार्ण होने लगता है और नौकरी या व्यवसाय से मुक्त होने के कारण समाज एवं परिवार में उनका वर्चस्व मान-सम्मान कम हाने लगता है, जिससे इन्हे अपना जीवन यापन करना कठिन हाने लगता है। प्रायः देखा जा रहा है कि आधुनिक युग में परिवार या समाज के युवओं की भावना एवं विचार में काफी बदलाव देखने को आता है, उनके सहन-सहन, व्यवहार आदि में अंतर हो जाता है।

**अकेलापन की समस्याः** परिवार से सामन्जस्य न कर पाना अलगाव. पृथक्कीकरण की अनुभूति युवा पढ़ी द्वारा वृद्ध के अनुभवों, विचारों, परामर्श को दुलक्षित करने के कारण उन्हें घर से अलग या वृद्धा आश्रमों में रखा जाना या घर से निकाल देने जैसी समस्याएं देखने को मिलती है, जिससे वृद्धों में अकेलापन की समस्या का निर्माण होता है।

**घर व समाज में अनादर की समस्याः** किसी भी वृद्ध को समाज व परिवार में मान-सम्मान की अपेक्षा होती है लेकिन आज के पष्चात्य संस्कृति के प्रवेष होने के कारण वृद्धों का अनादर देखने को मिलने लगा है, जिससे उन्हें घर में अपेक्षानुसार मान-सम्मान की जगह अनादर मिलने लगा है।

**सामाजिक समस्याएँ**

उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण आधारभूत और परम्परागत मानवीय मूल्यों का क्षरण हुआ है । इसी कारण वृद्धजनों की प्रस्थिति और भूमिका में अवनमन का कारण अनेक सामाजिक समस्याएँ हैं । ऐसी समस्याएँ सामाजिक इसलिए है क्योंकि इनका सरोकार समाजिक संबंधों के ताने-बाने से है । अध्ययनों से यह तथ्य ज्ञात है कि वृद्धजनों को उन लोगों के साथ अन्तः क्रिया करने में सरलता होती है जो उनकी भावनाओं के अनुसार उनसे संवाद करते हैं । वृद्धावस्था उन व्यक्तियों के लिए समस्या लेकर आता है जो स्वयं को इस अवस्था के लिए तैयारी नही कर लेतें हैं ।

आज वृद्धजनों की उपेक्षा का कारण वृद्धावस्था के प्रति लोगों के दृष्टिकोण में घटित व्यापक परिवर्तन है । सामान्यतः वृद्धजन अपने परिवार के सदस्यों से उपेक्षित होने के साथ अकेले समय व्यतीत करते हैं। वृद्धजनों में अकेलापन, विलगाव के कारण उनका सामाजिक जीवन समस्याग्रस्त है । वृद्धजनों के उचित देखभाल तथा उनके अनुभवों से भावी पीढ़ी को मार्गदर्शन और प्रेरणा लेने की आवश्यकता है । तीव्र नगरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वृद्धजनों में अलगाव की समस्या बढ़ती है । सामाजिक अलगाव से पुरुष बुजुर्ग महिला बुजुर्ग की तुलना में ज्यादा दुष्प्रभावित हैं । भारत की प्राचीन अंतरपीढ़ीगत सामंजस्य का दर्शन आज के उपभोक्तावादी समाज में नहीं हो रहा है"। वृद्धजनों की उपेक्षा करना उनमें दीनता के भाव को बढ़ाना है । वे दीर्घकालीन कमजोरी, बीमारी, निराशा, अकेलापन और अनुपयोगिता की भावना से व्यथित होते हैं" । वृद्धजन हमारे समाज की धरोहर हैं तथा वे परिवार और समाज से अलग नहीं होना चाहते हैं । परंपरागत भारतीय समाज में इन समस्याओं का निदान ग्राम, जातीय समूह और संयुक्त परिवार में हो जाया करता था । आधुनिकीकरण के फलस्वरूप इन संस्थाओं की मौलिक दशा में परिवर्तन हो गया है

**आर्थिक समस्याएँ**

नगरीकरण और औद्योगीकरण से वृद्धजनों का अलगाव अधिकाधिक होता जाएगा । वृद्धजनों की अनेक समस्याएँ हैं जिनके निदान के लिए सरकार स्वैच्छिक संस्थाओं, विशेषज्ञों आदि के सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है" । आधुनिकीकरण, तकनीकी परिवर्तन और गतिशीलता के कारण लोगों के जीने के तौर-तरीकों और मूल्यों में परिवर्तन हुआ है । इस परिवर्तन के कारण वृद्धजनों के प्रति आदर भाव को दुष्प्रभावित किया है । युवा पीढ़ी का शहर की ओर प्रवजन के कारण उन ग्रामीण वृद्धजनों को दुःखों के पंक में धकेल दिया है जिनके पास पर्याप्त आर्थिक संसाधन नहीं हैं । रोजगार प्राप्त शिक्षित नारी के पास घर में वृद्धजनों की सेवा - सुश्रूषा के लिए समय का अभाव है । नई पीढ़ी अपने प्रजननमूलक परिवार पर ही अपनी आमद का अधिकतर भाग खर्च करता है और अपने ही बुजुर्ग माता-पिता, दादा-दादी पर खर्च करने को प्रमुखता की श्रेणी में नहीं रखता है । इसी कारण वृद्धजनों में अवसाद, असहायता, दुःख, अकेलापन आदि आम बात है कुछ वृद्धजन आर्थिक सहारा के अभाव में भिक्षाटन करने के लिए अभिशप्त हैं क्योंकि उन्हें न तो संतानों द्वारा देखभाल का अवसर प्राप्त हो पाता है और न ही सरकारी-गैरसरकारी सहारा मिल पाता है । वृद्धाश्रम भी धनवान बुजुर्गों के लिए ही हितकर साबित हो रहा है । आज की नई पीढ़ी अपने माता-पिता तथा परिवार के अन्य बुजुर्गों से अलग रहना चाहती है । जिन संतानों के लालन-पालन में 'माता - पिता ने अपनी सुख-सुविधाओं की तिलांजलि दे दी, आज वही संतानें माता - पिता को भार समझ रहीं हैं । आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर बुजुर्गों को असम्मान, अकेलापन और अनेक अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर वृद्धजनों की समस्याएँ परनिर्भर वृद्धजनों की तुलना में अधिक होती हैं ।

आज भारत में वृद्धजनों की एक बड़ी संख्या अल्प आर्थिक स्तर पर जीवन व्यतीत कर रही है । पेंशन विहीन सेवानिवृत्त वृद्धजनों की दशा पेंशनयुक्त सेवानिवृत्त वृद्धजनों से बदतर है । ऐसे वृद्ध जो किसी सेवा में न होकर कृषिगत कार्यों में ही लिप्त रहकर जीवन यापन कर रहें हैं, उनकी आकांक्षा उन वृद्धजनों की तुलना में कम है जो सरकारी या गैर सरकारी सेवा में रहकर सेवानिवृत्त हुए हैं । परंपरागत जीवन जीने वाले बुजुर्गों में वंचन और दुख का स्तर सेवानिवृत्त बुजुर्गों की तुलना में कम होता है । पुनश्च, पेंशनयुक्त सेवानिवृत्त बुजुर्ग शारीरिक-मानसिक रूप से अच्छे हैं । अध्ययन से यह ज्ञात हुआ है कि बुजुर्गों में आर्थिक शक्ति होना आवश्यक है । आर्थिक शाक्ति युक्त वृद्धजन जीवित रहते अपनी संचित आर्थिक उपलब्धि को अपनी संतति को हस्तांतरित नहीं करना चाहते हैं और कहते हैं कि जब तक उनके हाथ में संपत्ति है तब तक परिवार उनकी देखभाल अवश्य करेगा । गाढ़े दिनों में कुछ वृद्धजनों को तों परिवार से अधिक मित्रगण ही सहायता करते हैं । यह भी सत्य है कि ऐसे परिवार जिसमें बेटा और बहू दोनों आर्थिक गतिविधियों लिप्त या सेवा में योजित होते हैं, उन परिवारों में बुजुर्ग माता-पिता को बच्चों की देखभाल के लिए प्रकार्यात्मक माना ही माना जाता है । ऐसे प्रकार्यात्मक बुजुर्ग अपने बेटे-बहू के प्रेम और सहानुभूति से संतुष्टि का अनुभव करते हैं । नई पीढ़ी अपने बच्चों का लालन-पालन और अपनी अल्प आय का हवाला देकर अपने बूढ़े माता-पिता की उचित देखभाल कर पाने में असमर्थता व्यक्त करती है । अतः आर्थिक रूप से सुरक्षित होना सुखमय बुढ़ापे के लिए एक महत्त्वपूर्ण कारक है ।

**निष्कर्ष**

वृद्ध लोग समाज के लिए बहुत उपयोगी हो सकते है लेकिन उनके अनुभवों का उपयोग समाज अच्छी तरह नहीं कर रहा है। अधिकांश वृद्धों ने अपनी समस्याओं के निराकरण के लिए यह सुझाव दिया कि बच्चों को समाज के लोगों को ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिससे वे वृद्धों का आदर करना सीखें। दूसरा मुख्य सुझाव आर्थिक सहायता का है शारीरिक समस्या वृद्धों की प्रमुखतम समस्या है। वृद्धों के लिए बेहतर स्वास्थ्य सेवायें उपलब्ध कराया जाए एवं स्वास्थ्य शिक्षा के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाय वृद्धों की आर्थिक समस्या कम करने के लिए और अकेलापन की भावना इत्यादि को कम करने के लिए वृद्धों के लिए स्वयं सहायता समूह विकसित किये जाए, जिससे उन्हें आर्थिक सहायता मिलेगी। उनका अनुभव विकसित होगा और अकेलेपन की भावना भी कम होगी। वृद्धों की समस्याओं को लेकर हर फोरम पर अभिव्यक्ति की जरूरत है। सामाजिक, राजनीतिक एवं भूमंडलीय स्तर पर गंभीरता से इन्हें सुलझाने का प्रयास किया जाना चाहिए। हमें वृद्धों के प्रति सही दृष्टिकोण, वृद्धों की जरूरतों एवं उनके जीवन को ध्यान में रखकर सही निर्णय लेने की आवश्यकता है। ऐसे सामाजिक तंत्र को विकसित करना होगा, जो वृद्धों की देखभाल बिना एक-दूसरे पर आक्षेप लगाकर कर सके। हमें समाज में यह चेतना जगानी होगी कि वृद्ध हमारी जिम्मेदारी नहीं, आवश्यकता हैं। वे जीवन के अनुभवों के खजाने हैं जिन्हें सहेजकर रखना हर समाज एवं संस्कृति का धर्म एवं नैतिक जवाबदारी है 'वृद्धावस्था को सम्मान पूर्वक एवं शांति पूर्वक व्यतीत करने के लिए सिर्फ आवश्यकताओं की पूर्ती हो जाने की आकांक्षा रखनी चाहिए एवं उसमें ही संतुष्ट रहना चाहिए न की अपनी प्रत्येक इच्छा पूर्ती के लिए जिद्दोजहद ।

**संदर्भ**

1. नाटेशन, हेमलता, 1990. "प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड" इन नेशनल सिम्पोसियम ऑफ साइको - सोशल, मेडिकल एण्ड बायोलॉजिकल आस्पेक्ट्स ऑफ एजिंग ( अगस्त 9-10. कोयम्बटूर), बुक ऑफ एबस्ट्रैक्ट्स कोयम्बटूर पी.एस. जी. कॉलेज ऑफ आर्ट्स एण्ड साइंस, डिपार्टमेंट ऑफ साइकोलॉजी, पेज 23 ।

2. अटल, योगेश (2015), भारतीय समाज नैरन्तर्य एवं परिवर्तन दिल्ली ।

3. प्रदीप कुमार, धर्मेन्द्र प्रताप सिंह "प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड इन इंडिया' इन इंडियन जर्नल ऑफ सोशल रिशर्च, 2008; 49:3 ।

4. भाई, एल. थारा 1998: कान्सेप्ट ऑफ ओल्ड एज अ स्टडी अमंग थ्री जनरेशन्स ( आईएसए पेपर); स्पेन, इंटरनेशनल सोशियोलॉजिकल एसोसिएशन ।

5. चौहान, एस. के. 1987 "एज एण्ड सोशल स्ट्रेटिफिकेशन" इन शर्मा, मदन लाल. एण्ड डाक, टी. एम. ( एडि.) एजेइंग इन इण्डिया: चैलेंजेज फॉर दी सोसायटी दिल्ली, पेज 94-105 ।

6. फुस्टिनोनी, ओस्वाल्डो 1982: "दी ओल्ड एज: चैलेंज एण्ड अपरचुनिटीस" इन स्वस्थ हिन्द, वोल. 26, नं. 3-4, मार्च-अप्रैल, पेज 69-71 ।

7. हल्दर, अरुण 1998: "ओल्ड एजः एनसियंट एण्ड मॉडर्न टाइम्स' इन एजेइंग एण्ड सोसायटी: इंडियन जर्नल ऑफ जेरोन्टोलॉजी, वोल. 8 नं. 3-4 जुलाई - दिसम्बर, पेज 1-10 1

8. बालकृष्ण 1986: "ओल्ड एज प्रॉब्लेम्स इन दी पर्सपेक्टिव ऑफ एज ट्रेट्स" इन वर्ल्ड कांग्रस ऑफ दी इंटरनेशनल सोसियोलॉजिकल एसोसिएशन ( 11वाँ, अगस्त 18-22, नई दिल्ली) प्रोसीडिंग्स ।

9. रंजन, रेनू, 1986. "एजिंग ईश्यूस इन इंडिया (विथ स्पेशल रेफरेंश टू बिहार ) " इन वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ दी इंटरनेशनल सोशियोलोजिकल एसोसिएशन (11 अगस्त 18-22. न्यू दिल्ली), पेपर्स ।

10. तालिब, मोहम्मद 2000: "दी लास्ट सीन इन सेमिनार, नं. 488, अप्रैल, पेज 51-54 ।

11. रामनाथ, राजलक्ष्मी 1989: "प्रॉब्लेम्स ऑफ दी एजेड" इन पाती, आर. एन. एण्ड जेना, बी. (ईडीएस) एजेड इन इंडिया : सोशियो - डिमोग्राफिक डाइमेंशन नई दिल्ली, आशीष, पेज. 125-132 ।

12. "लोंगिंग टू बिलोंग" इन हेल्थ फॉर मिलियन्स, वोल. 25 नं. 5 सितम्बर-अक्टूबर, 1999, पेज. 21

13. मिश्रा, सरस्वती 1999: (प्रोब्लेम्स ऑफ दी एजेड एण्ड दियर्स सोल्यूशन्स") इन इंटरनेशनल कान्फरेन्स ऑन जेरियाट्रिक्स एण्ड जेरेन्टोलॉजी (नवंबर 12-14, नई दिल्ली) सूवेनिर म अब्सट्रैक्ट बुक पेज 61 (मीमिओग्राफ्ड ) ।

14. कोहली, डी.आर. 1987 : "चैलेंज ऑफ एजिंग " इन शर्मा, एम. एल. एण्ड डाक, टी. एम. (ईडीएस.) एजिंग इन इंडिया: चैलेंज फॉर दी सोसायटी, दिल्ली, अजंता, पेज 3-7 ।

15. वाखरे, एम.एम. 1995: इंटरनेशनल ईयर ऑफ दी फेमिलीः इंडिया एण्ड दी एजेड (60 एण्ड अबव ) " इन वन्यजाति, वोल. 43, नं0 4 जनवरी, पेज 1-2 |